641
161 P
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 641

891.431
M687 R

किसान पुस्तकमाला का प्रथम पुष्प—

❀ बन्देमातरम् ❀

राष्ट्रीय-आल्हा
यानी
भगतसिंह की लड़ाई
(पहिला भाग)

गुस्सा आई भगतसिंह को बम्ब का गोला दियो चलाय।

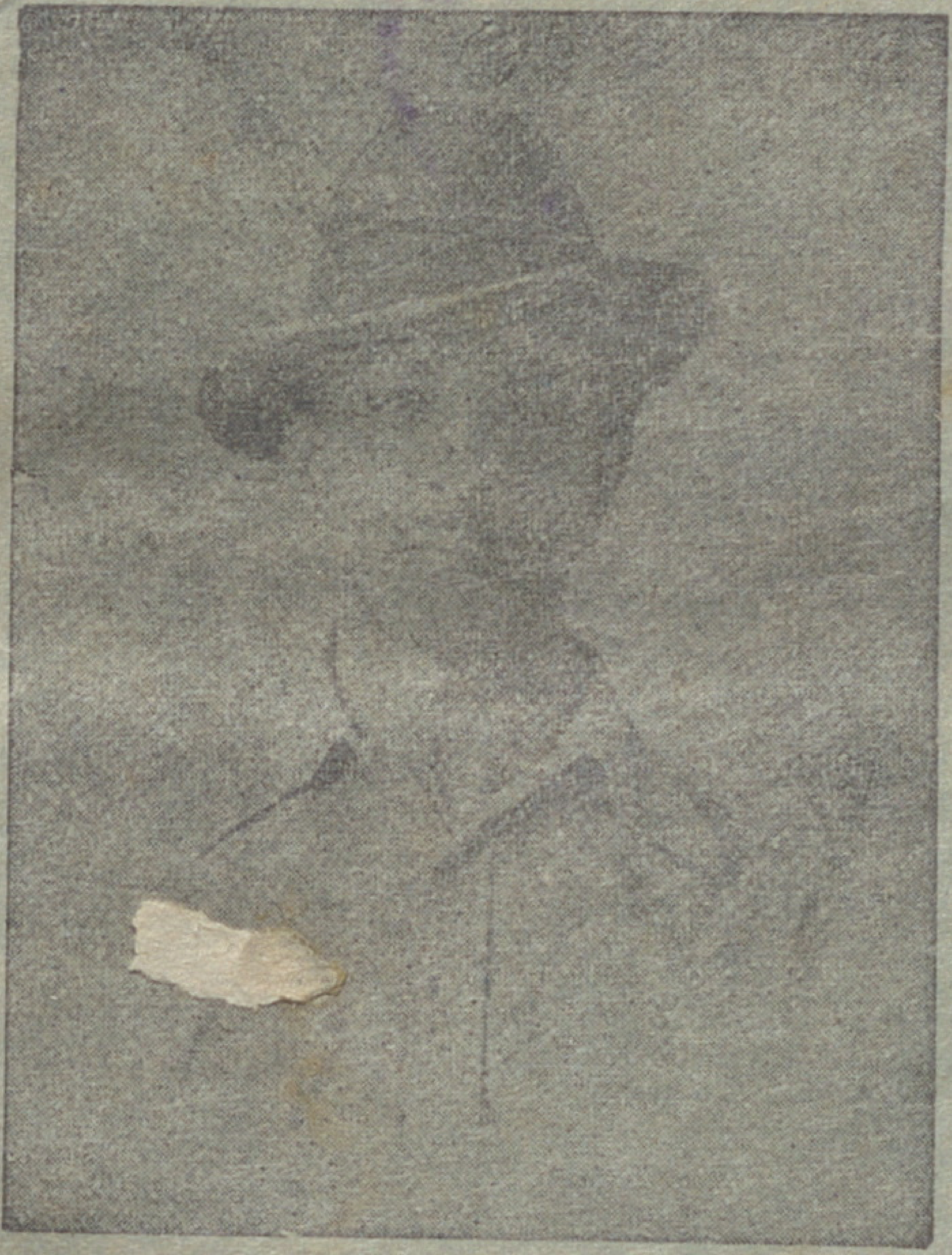

बारह फैरी लिये तमंचा गोली सनन सनन सन्नाय ॥

लेखक :—
कामरेड सूर्यप्रसाद मिश्रा

प्रकाशक :—
रामनारायण त्रिपाठी खालागांव, देशपुर-कानपुर।

प्रथमवार २०००] सर्वाधिकार सुरक्षित [मूल्य =) आना

89a

6/1911

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 641
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ बन्देमातरम् ❀

राष्ट्रीय-आल्हा

यानी

भगतसिंह की लड़ाई

(पहिला भाग)

सुमिरण करिके नारायण को, औ शारद के चरण मनाय।
सुमिरि शूरमा सब स्वदेश के, जिन तन दियो देश के काज॥

रम्भा झूमत हौ कहा, थोड़े से दिन हेत।
तुमसे केत होगये, अरु होइहैं यहि खेत॥
अरु होइहैं यहि खेत मूल लघु शाखा हीने।
ताहू पर गज रहै दीठि प्रति तुम पर दीन्हे॥
कह गिरधर कविराय हमें लखि होत अचम्भा।
एक जनम के लागि कहा झुकि झूमत रम्भा॥

पहिले सुमिरौं भारत माता औ भगवान तिलक महराज।
दुसरे सुमिरौं गांधी जी का जिन यह भारत दियो जगाय॥
सुमिरण करिये कार्ल मार्क्स को जिनका ऋणी गरीब समाज।
याद करत हौं गुरु लेनिन का जो हैं देव गरीबन क्यार॥
छाई दरिद्रता दुनियां भरमें कोई बरणि न पावे पार।
जो हर जोतत हैं खेतन में बेंड़ी राति चलावें हार॥
काटत कटिया हैं जाड़े मां मुहके फटत भुरहरी रात।

गेहूं पैदा करि खेतन में औ फिरि पैदा करैं कपास ॥
वोही भूखन मरैं जनम भर कपड़ा नहीं गजौ भर पास ।
यह अन्धेर सबै दुनियां में ना एक भारत केर सवाल ॥
दुसरी ओर वहीं पर भाई सुनियो कछू और फिर हाल ।
बड़ि २ कोठी महराजन की जिनमा भरे माल असवाव ॥
भरी बखारी हैं नाजन की जिनका कोई नहीं शुमार ।
कपड़न की को बात चलावे उनके घर में लगे पहाड़ ॥
मोटर हाथी उनके घर में घोड़ा टम टम सबै तयार ।
सर में दर्द होय जो उनके डाक्टर दवा लिये तय्यार ॥
नौकर चाकर उनके घर में औ इशरत के सब सामान ।
मालदार सब मजा उड़ावें भूखन मरे सकल संसार ॥
उल्टे काम चलैं दुनियां में उल्टे होंय सबै व्यवहार ।
काम करैं जो मेहनत करिके वोही मरैं पेट की मार ॥
करना काम बेइज्जती समझें बैठे आनन्द रहे उड़ाय ।
माल उड़ावें मेरे घर का औ फिरि हमको रहे सताय ॥
धांधा गर्दी यह खासी है मालदार जो रहे मचाय ।
कायम तौलौं यह दुनियां में जौलौं हममें होय न मेल ॥
लूट बन्द तौ तवहीं होइहै जबहीं एका करैं किसान ।
उलट पुलट होवे दुनियां में मिटै डकैतन केर निशान ॥
कबहूं हमने ना यह सोची काहे दुखिया रहैं किसान ।
गेहूं, दूध, चना अरु बेझर घी गुड़ और रूई अरु धान ॥
साल भरे में मेहनत करिके पैदा करैं सभी सामान ।
सावन भादौं की बर्षा में सर्दी माह पूस दरम्यान ॥
न्याय जगत का येही होता मेहनत करै सोई फल खाय ।

उल्टी गंङ्गा बहैं यहां पर हमते कछू कही ना जाय ॥
हमरी ग़रीबी का कारण कुछ पंडित कहैं पुर्बुले पाप।
अबकी जन्म पाप जो करिहौ भुगतौ सात जन्म लौं भाय ॥
पिछले जन्म के अब भुगतत हौ अबके किये नाहि निस्तार।
तेहिते तुमका समुझावत हौं इतनी मानौं कही हमार ॥
खूब लगान देव समये पै खेती चहै न देय छदाम।
हरी, बेगार और भूसा देव गैय्या, भैंसी देव दुहाय ॥
कर्जा लावो जो बनियां से अटके वक्त रुपय्या चार।
एक २ के दस २ देवैं तबहूं नहीं होंय उद्धार ॥
पंडित पीछे सीख सिखावै कर्जा महा पाप की खानि।
ऋण हत्या ना मिटै मिटाये चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
सात जनम लौं पीछा करिहै तुमरो नहीं स्वर्ग पै बास।
तौलौं कर्जा पटिहै नाहीं जौलौं ब्यवहर करै न माफ ॥
जो दिन रात लूटते हमको उनको खुला स्वर्ग का द्वार।
उल्टी महिमा है मजहब की जिसको कोई सकै ना टारि ॥
पंडित और मौलबी मुल्ला और पादरी संग लिवाय।
मन्दिर, मस्जिद, गिर्जा बोलैं बोली सबकी एक मिलाय ॥
अरे गरीबो तुमरे खातिर पीछे स्वर्ग होय तैय्यार।
खूब कमावो मेहनत करिके पूंजीपति का देव लुटाय ॥
जो कछु पुन्य करौ यहि जग में दूनी मिलै वहां तय्यार।
दूध दही की नदियां बहतीं औ वह भवन सौबरण क्यार ॥
भोजन खातिर दाख छुहारे सेना में झुंड अफ़सरन क्यार।
काम वहां ना परिहै तुमको बैठे मौज करौ दिन राति ॥
कहि २ बातें यहि प्रकार की औ दुखियन का लियो लुभाय।

जो कुछ पैदा करैं साल में तनक देर में लेयं छिनाय ॥
फैल गरीबी गई दुनियां में भूखन मरैं मिहनती लोग ।
दस हैं सुखी दुखी हैं नब्बे ऐसे नजर पड़ैं बहु लोग ॥
येही हालत दुनियां भर की भारत नहीं रहा अपवाद ।
भारत की हालत खराब है ज्यादा यहै भयो बरबाद ॥
दुसरे देश में दुई गोल हैं यारो धनी और मजदूर ।
रुपया वाले एक तरफ़ हैं दुसरी ओर सभी मजदूर ॥
राज्य करत हैं रुपया वाले धांधागर्दी रहे मचाय ।
हैं मनमानी वे सब करते पीवें खून गरीबन क्यार ॥
अपने यहां मुसीबत भारी जो है राज बिदेशिन क्यार ।
सात समुन्दर से वह आये बनियां राज्य बृटिश सरकार ॥
करत तिजारत हैं भारत में अरबन रुपया रहे उड़ाय ।
लाखों रुपया पेन्शन के हित सीधे चलो विलायत जाय ॥
तीनि अरब का खाली सोना हमने यहं से दयो लदाय ।
बड़े लाट साहब का खर्चा साल में होत अठारह लाख ॥
बड़ि २ तनख्वाहें लेते हैं चूसैं खून गरीबन क्यार ।
छाय अतंक रह्यो भारत में त्राहि २ की मची पुकार ॥
न तो भारती अई० सी० एस हों औ ना जज्ज बनाये जाँय ।
बड़ी नौकरी कोई न पावें ना कोइ पावें बिलायत जान ॥
छोटा समझैं भारतीन को और करैं उनका अपमान ।
भई बेइज्जती धनवानों की उनको लगी बुरी यह बान ॥
एका करिके धनवानों ने औ फिरि कही गई यह बात ।
कांगरेस की खुली कमेटी जलसा होंय साल पर साल ॥
अर्जी भेजैं गौरमेन्ट को लेक्चर देयं प्रार्थना क्यार ।

मांगैं नौकरी अंग्रेजन से औ मांगैं पास बिलायत क्यार ॥
करैं पास प्रस्ताव वहां जो औ बिन हंसे रहो नहिं जाय ।
ऐसी हालत रही कछुक दिन बाद में भई तरक्की आय ॥
बाल पाल और लाल आगये माता केर दुलारे लाल ।
इनके आवत परलै होइगै एकदम मचिगौ हाहाकार ॥
नहीं नौकरी हमका चहिये और न खुशी बिलायत क्यार ।
कौंसिल सीटैं हमें न चहिये औ ना चहिये हमें खिताब ॥
इनसे काम चलन का नाहीं गंगाधर ने कही पुकार ।
अब आजादी हमका चहिये भारत माता आय हमार ॥
इंतजाम सब हम करि लेहैं हमको नहीं किसी की चाह ।
बृटिश हुकूमत मिटै यहां से होवे राज्य किसानन क्यार ॥
बहुत दिनन लौं दुःख उठाये आगे हमपै सहे न जांय ।
सुनि २ बातैं यह शेरन की बृटिश हुकूमत गइ थर्राय ॥
बंग भंग भौ उन्हीं दिनन में आंधी आइ स्वदेशी क्यार ।
सबने छोंड़े बस्त्र विदेशी कपड़े पहिने स्वदेशी आय ॥
बंग भंग ते चिढ़ि बंगाली बरसा होन बम्ब की लाग ।
कहुं २ बरसा होय बम्ब की कहुं २ गोलिन की बौछार ॥
देश भरे में छिड़ी लड़ाई अन्धाधुन्धी परै सुनाय ।
मन घबड़ानी बृटिश हुकूमत नीचे को सिर लियो झुकाय ॥
बांट बंद भई बंगाले की होय गइ बिजय भारतिन क्यार ।
लहर उठी थी देश भरे में असंतोष की फैली आग ॥
दमन जोर भौ तब सरकारी जेल में गये तिलक महराज ।
बिपिनचन्द्र औ लाला जी को इन्हें देश ते दओ निकारि ॥
कछुक दिनन का आगी दब गई शान्ति के लक्षण परै दिखाय ।

भूल फिरंगी गये निज मन में हम आन्दोलन दओ दबाय ।।
होंय तयारी चुपके २ बम, पिस्तौल होंय तैय्यार ।
दौड़ा होंय सभी नेतन के फौजें गदर हेतु तैय्यार ।।
गदर पार्टी अमरीका की भेजे रुपया औ हथियार ।
छिड़ी लड़ाई तब योरप में संकरे परी ब्रिटिश सरकार ।।
एक ओर सब जर्मन वाले दुसरी ओर सताइस राज्य ।
चार साल लौं चली लड़ाई सब राजा होय गये तबाह ।।
भई जरूरत अंग्रेजन का मांगी मदद भारतिन क्यार ।
रुपया, पैसा, गल्ला, दीन्हों लाखन जोधा दिये कटाय ।।
गांधी जी से वादा कीन्हों शान्ति भये मां देंय सुराज ।
सब समुझावें गांधी जी का बेईमान बृटिश सरकार ।।
काम निकरि जब इनको जैहे पुंछिहैं नहीं ज़रा भी बात ।
मौका बढ़िया यहि औसर पर अबहीं गदर देव करवाय ।।
फौजें बागी सब होय जैहें अंग्रेजन का देव भगाय ।
गदर मचि गयो सिंगापुर में होइगा राज्य सिपाहिन क्यार ।।
पन्द्रह दिन तक राज रही वह ना कोई कछु सको बिगाड़ ।
पता लागिगा अंग्रेजन का हुइ गये पहिले से हुशियार ।।
गदर फेल भयो सन १५ का जो था युद्ध अज़ादी क्यार ।
लाखों बीर मरे गोली से लाखों जेल दये पठवाय ।।
बहुतक बीर टंगे फांसी पर पहुँचे स्वर्ग लोक में जाय ।
जौंन फौज ने करी बगावत कालेपानी दये पठाय ।।
बागी फौजें भरि जहाज में औ समुद्र में दई डुबाय ।
कहँ लौं ज़ुल्म कहौं मैं इनके लिखते कलम जाय थर्राय ।।
गांधी जी ने यह सब देखो तबहूँ दियो उन्हीं को साथ ।

बड़े बहादुर हिंदुस्तानी जर्मन के दये होश बिगाड़ ॥
बंद लड़ाई भई योरप की जर्मन हार गयो तत्काल ।
बंधो आसरा सबके मन में अबहीं हमको मिलै सुराज ॥
बड़ी खुशी थी सबके मन में मानों हुइ गये सब आजाद ।
गौरमेंट को फुर्सत मिल गई फौजें साजि भईं तैयार ॥
बनी कमेटी अंग्रेजन की जांच का लग्गा दियो लगाय ।
रौलट बिल फिर पास कर दियो हमरी गौरमेंट सरकार ॥
ना कोउ सभा करै भारत में ना कहुँ जुरैं आदमी पांच ।
लाठी डंडा ना कोउ राखै ना कोउ लेख लिखै अखबार ॥
बंद ज़बान कर दई सबकी देश में छायो हाहाकार ।
राज्य के बदले रौलट आयो जनता सबै उठी अकुलाय ॥
गांधी जी ने कमर बांधि कै असहयोग को दियो चलाय ।
बाइकाट करि बृटिश हुकूमत औ कानून दई तुड़वाय ॥
देश भरे में हलचल मच गई सबही लोग भये तैयार ।
जगह जगह पर होंय सभायें जहँ लाखों के होंय जमाव ॥
रौलट बिल की निंदा होती बाढ़ो क्रोध भारतिन क्यार ।
जलियां वाले बाग के भीतर डायर फायर दियो कराय ॥
शान्त सभा थी सब लोगों की गोली चलन लगी तत्काल ।
छिड़ी लड़ाई असहयोग की ताको हाल देंय बतलाय ॥
बाईकाट कर गांधी जी ने बृटिश हुकूमत दई हिलाय ।
बस्त्र विदेशी उन छुड़वायो और अदालत दईं छुड़ाय ॥
सरकारी नौकरी छोड़ दई औ उन छोड़े सबै खिताब ।
अंग्रेजी कालेज छोड़ दये औ उन देशी दये खुलाय ॥
गांव गांव पंचायत बादिगै जहँ पर होन फ़ैसला लाग ।

चर्खा चलन लगो घर घर में कपड़ा बुनन जुलाहे लाग ॥
काम बंद सरकारी हुइगे वृटिश हुकूमत गइ थर्राय।
बड़े जोर से चलै लड़ाई दिन दिन बढ़ै चौगुनी रार ॥
जगह जगह सैनिक भये भर्ती जनता होन लगी तैयार।
यह गति देखी अंग्रेजन ने मन में गये बहुत घबड़ाय ॥
अस्त्र पुरानों यही देश को जासों वृटिश रही थर्राय।
पकड़ि पकड़ि कै सब नेतन का जेल में बंद दियो करवाय ॥
नेता पकरत परलै होइगै बुझी आग फिर दई लगाय।
जैसे घी डारें आगी में उठिकै लपट अकाशै जाय ॥
बढ़ी लड़ाई असहयोग की मारामारी परै सुनाय।
यही समैया के औसर पर घटना घटी और कुछ आय ॥
गोरखपुर के जिला बीच में चौरा चौरी एक मुकाम।
जो कुछ किस्सा भयो यहां का सो अब आगे करत बयान।
घूमें सैनिक कुछ बजार में चौरी चौरा के दरम्यान ॥
झंडा कर में लिये तिरंगा भारत की जै रहे पुकारि।
पुलिस हाल जब ऐसो देखो मन में गुस्सा बढ़ी अपार ॥
सैनिक एक पकड़ कर तुरतैं सो पेंड़े में दयो बँधाय।
ऊपर मारु करी डंडा की जाको हाल कहो ना जाय ॥
अंधा धुंध मारु भई वहँ पर टेक न छोड़ी बहादुर ज्वान।
हाथ जोरि के जनता ठाढ़ी और पुलिस से कही सुनाय ॥
मारु बंद अब याकी करि देव नहिं सब जैहैं काम नसाय।
इतनी बातें सुनि जनता की क्रोधित भई पुलिस सरकार ॥
लैकै हंटर चमड़ा वारो मारा मारी दई मचाय।
जाके कोड़ा हनिकै लागै दैय्या तोबा करै पुकार ॥

हालत देखी जब जनता ने मन में गुस्सा बढ़ी अथाह।
उठे भभूका है तरवा से गे चोटिया में गुंज बुझाय ॥
जै जैकार करी गांधी की और पुलिस पर पड़ी दुराय।
यह गति देखी पुलिस सिपाहिन अपने लै २ भगे परान ॥
तुरतैं भागि घुसे थाने में फाटक बंद दये करवाय।
जनता सब मिलि आगे बढ़ि गइ औ थाने को लियो घेराय ॥
फाटक बन्दी लखि थाने की नयना अगिन ज्वाल हुइ जांय।
सबने मिलि के यह ते कीन्हो थानो अबहीं देंव फुकाय ॥
तेल डारि दियो है थाने पर तुरतैं बत्ती दई लगाय।
आगी लागत परलै हुइ गइ जिन्दा बचो न एकौ ज्वान ॥
ऐसो हाल सुनो गांधी ने मन में गये सनाका खाय।
तुरतै हुकुम करो भारत में बंद लड़ाई दई कराय ॥
मौका मिलि गओ अंग्रेजन का दमन अस्त्र उन लओ उठाय।
गांधी जी को जेल भेज दओ यहं पर जुल्म होन बहु लाग ॥
लाठी डंडा चले सभा में फूटैं शीस किसानन क्यार।
जमींदार सब मिला २ कर अमन सभा उन लई बनाय ॥
गांव २ औ नगर २ में घूमि २ के कहत सुनाय।
मदद कांगरेस की करिये ना नहिं सब जैहैं काम नसाय ॥
हुकुम कठिन है अंग्रेजन को तुमको दीहैं जेल पठाय।
यही समैया के मौका पर छाई घोर निराशा आय ॥
अंधकार चहुं ओर से छाई कोई राह बतैया नांहि।
बड़े २ नेता गये जेल में जिनके नाम देंय बतलाय ॥
मोतीलाल जवाहर नेहरू पहुंचे जेल लाजपतिराय।
देशबन्धु सी० आर० दास जी पहुंचे श्री गांधी महराज ॥

टण्डन जी भी गये जेल में जो असेम्बली के सरताज।
दानबीर श्री शिवप्रसाद जी औ श्रीप्रकाश को दओ पठाय ॥
शौकत और मुहम्मद आये आये वहां मुरारीलाल।
बोस बन्धु सब गये जेल में जिनके धन का नहीं शुमार ॥
राजेन्द्र बाबू गये जेल में पहुंचे चन्द्रशेषर आजाद।
सजा बेंत की जिनने पाई बोलैं गांधी की जैकार ॥
हिन्दुस्तानी प्रजातन्त्र के बाद में हुये वही सरताज।
सेनापति भये मुल्क भरेके गवरमेन्ट को दियो हिलाय ॥
बम पिस्तौलें उनके कर में रखते सदा हथेली जान।
बड़े २ अफ़सर थर्राते कांपें सभी लखपती ज्वान ॥
भर्ती होन लगी चुपके से चुपके होन संगठन लाग।
बम, गोली बारूद बनाना शिक्षा होय निशाना क्यार ॥
पड़ी ज़रूरत अब रुपया की सब मन ही मन करत बिचार।
रुपया पैसा कहां से पावें जासो चलै हमारो काम ॥
राजकुमार सिनहा फिर बोले मेरी मानों एक सलाह।
लदो खजाना है गाड़ी पर चलिके लूट लेव करवाय ॥
यह सलाह सबके मन भाई तुरतै साजि भये तैय्यार।
रामप्रसाद बिस्मिल भये ठाढ़े सजि गये रोशनसिंह सरदार ॥
राजेन्द्रप्रसाद अशफाकुल्ला खां सुरेशचन्द्र भये तैय्यार।
सजे त्रिवेदी रामदुलारे राजकुमार कानपुर क्यार ॥
तुरत तमंचा कर में लैके मनमथनाथ भये तैय्यार।
शचीन्द्रनाथ बक्सी भये ठाढ़े सजिगये चंशेपर आजाद।
सजो बहादुर औरैया को जाको नाम मुकुन्दी लाल ॥
कोई पिस्तौलें कर में लीन्हें कोई लिये तमंचा हाथ।

साजि साजि बीर चले आगे को काकोरी में पहुँचे जाय ॥
नाला एक भयानक जहँ पर सिगरे बीर पहुँच गये जाय।
हियां की बातें हियनैं रहि गईं अब आगे के सुनौ हवाल ॥
करि सलाह रोशनसिंह चालि भये बालामऊ पहूँचे जाय।
जौन ट्रेन पर लदो खज़ाना ताकी टिकट कटाई जाय ॥
बैठ बहादुर गयो गाड़ी पर मन में सुमिरि श्री भगवान।
छूटी ट्रेन चली आगे को औ नाले पर पहुँची जाय ॥
सांकर खींची रोशनसिंह ने गाड़ी तुरत खड़ी हुइ जाय।
भारतबीर तयार खड़े थे तुरतैं गोली दई चलाय ॥
जहां खजाना था सरकारी तुरते वहां पहुँचिगे जाय।
बांधि जंजीरन दियो गार्ड और डराइवर को दओ बंधाय ॥
जौन सिपाही वहं पर बैठे सब को तुरत लयो बंधवाय।
छीनि बंदूकें उनकी लीन्ही और निहत्थो दओ बनाय ॥
हुकुम भयो फिर बिस्मिल जी का कोऊ शीस निकालै नांहिं।
जो कोउ उतरे गाड़ी पर ते ताको कालु रहो नगिचाय ॥
चुपके बैठो तुम गाड़ी में तुमसे कोउ बुलैया नांहिं।
तुम्हरी चीजें हमें न चहिये नांही हमें कछू दरकार ॥
हम हैं बीर मातु भारत के लें सरकारी माल लुटाय।
तासे तुमको समुझैयत है कोऊ कदम बढ़ैयो नांहिं ॥
कोई ठाढ़ो भयो इंजन पर कोई खड़ो गार्ड के पास।
मिनट २ पर छुटैं तमंचा होवे गोली की बौछार ॥
चलैं हंथौड़ा तंह बीरन के संदूकैं ना जुम्मस खांय।
हाहाकार मचो गाड़ी में खट खट परी हथौरन क्यार ॥
सेनापति तब आये वहां पर आये बीर मुकुन्दीलाल।

लागी चोटें जब शेरन की टूटो कुलुफ खजाने क्यार ॥
रुपया पैसा गठरी बांधी औ लखनऊ की पकरी राह ।
खबर फैल गइ दुनियां भर में डाका पड़ो खजाना मांझ ॥
लुटो खजाना है सरकारी अखबारन में दियो छपाय ।
सुनत खबरिया परलै हुइ गइ बृटिश हुकूमत गइ घबड़ाय ॥
खोजबीन होइगै तब जारी डांटैं पड़ी पुलिस पर आय ।
मुलुक भरे में होय तलाशी मचिगै धूम ककोरी क्यार ॥
कछुक दिनां लौं भई तलाशी नाहीं लागो पता निशान ।
ऐसी हालत जबहीं देखी बृटिश हुकूमत रही रिसाय ॥
खुफिया पुलिस पास बुलवाई औ उनसे फिर कही सुनाय ।
पता लगाओ घूमि २ कै किसने माल लियो लुटवाय ॥
इतनी सुनिकै खुफिया चालि भइ औ फिर पता लगावन लाग ।
चिट्ठी एक दोस्त अपने को बिस्मिल जी ने लिखी बनाय ॥
पकड़ी चिट्ठी खुफिया वालेन मन में बहुत खुशी होय जांय ।
जाय के पकड़ो बनवारी को मुखबर भयो ककोरी क्यार ॥
डंडा बाजो जब पीठी पर एक एक का दओ गिनाय ।
चारों तरफा पुलिस दौड़ती औ सब बीर लये पकड़ाय ॥
डेढ़ बरस लौं चलो मुकदमा चक्रित हुइ गयो सकल जहान ।
चारि बीर फांसी पर लटके तिनके नाम देंय बतलाय ॥
रामप्रसाद औ रोशनसिंह अश्फाल्लकुाखां सरदार ।
फांसी पाई इन बीरन ने औ राजेन्द्र बनारस क्यार ॥
शचीन्द्रनाथ को काला पानी औ रणबीर मुकुन्दी लाल ।
दई सजायें बहु बीरन का सब को दियो जेल पठवाय ॥
भयो वारएट चन्द्र शेखर का कोई छांह सको ना पाय ।

दस हजार रुपया इनाम था जो कोइ देवै पता बताय ॥
खुफिया हारी मूड़ पटकि कै मन में पुलिस गई शर्माय ।
पता न लागो सेनापति का बृटिश हुकूमत गई लजाय ॥
यहां हाल अब हियने राखौ कछु आगे के सुनो हवाल ।
यही बीच में भई लड़ाई कौंसिल और असेम्बली क्यार ॥
सुराज नाम की बनी पार्टी वहँ पर बहुमत लियो बनाय ।
भये सभापति बिट्ठल भाई जिनका जाने सकल जहान ॥
बातैं होन लगीं सुराज की कुछ २ होन जाग्रती लाग ।
बृटिश हुकूमत चाल चली है एक कमीशन दियो बनाय ॥
सब अङ्गरेज हते उस दल में करि बे जांच भारतिन क्यार ।
लीनि रिपोर्ट गई थी उनसे सोऊ सुनो लगा कर कान ॥
हिन्दुस्तानी किस काबिल हैं उनको कहा दिया अब जाय ।
असंतोष की आग लागि गई सबरो देश भयो नाराज ॥
हुकुम फेर दियो कांगरेस ने बाईकाट साइमन क्यार ।
जगह २ पर होंय सभायें मचिगै धूम जुलूसन क्यार ॥
लहर फैलगई मुल्क भरे मां चहुं दिशि हलचल परै दिखाय ।
जगह २ काले झंडों से स्वागत होय साइमन क्यार ॥
लौट साइमन लौट साइमन हिन्दुस्तानी रहे पुकारि ।
नहीं कमीशन हमका चहिये नाहीं हमें जांच दरकार ॥
काबिल औ नाकाबिल जैसे हिन्दुस्तानी लिहैं सुराज ।
बाइकाट भओ तब लखनौ मां जहं का मजेदार है हाल ॥
शहर भरे में हलचल मचिगै आये वहां जवाहिर लाल ।
ठौर २ पर जत्था घूमैं झंडा लिये तिरङ्गा हाथ ॥
जोश फैलि गओ है नस २ में आज़ादी धुन रहे पुकारि ।

फौजें घूमैं जहं गोरन की घूमैं पैदल औ असवार ॥
भरि बंदूक धरी कांधेपर कर में लिये नागिन तरवार।
ऊपर किरचैं बंदूकन के चमकैं कौंधा की उनहार ॥
घोड़ा दौड़ाये तब जनता पर ऊपर लाठी दई चलाय।
जाके लाठी लगै डांटि के खोपड़ी टूक २ होय जाय ॥
डंडा लागो राष्ट्रपती के जिनको नाम जवाहिर लाल।
देश दुलारे जो भारत के औ हैं प्रान किसानन क्यार ॥
गोविन्द बल्लभ पन्त के ऊपर डंडा रही पुलिस चलाय।
मार मार डंडा लाठिन के हड्डी चूर चूर हुइ जाँय ॥
आज वजीर वही सूबे के जिनसे पुलीस रही घबड़ाय।
वही पन्त को बड़े २ अफसर शीस झुकाय करैं आदाब ॥
बहिष्कार भओ जगह २ पर साइमन मनै गये खिसियाय।
ऐसो हाल साइमन देखो तुरतै हुकुम दओ करवाय ॥
झंडा वाले वहां न आवें जहं पर राह साइमन क्यार।
जगह २ पर पहरा लागि गये फौजें अड़ी तिलंगन क्यार ॥
गये साइमन देश २ में काले झंडे परैं दिखाय।
मन खिसियाने सैमन साहब पहुंचे तुरत लहाउर जाय ॥
भई तयारी बाइकाट की जनता तुरत भई तैय्यार।
चलो जुलूस वहां से साजिके काले झंडा संग लिवाय ॥
आगे जिसके लालाजी थे जो पंजाब केसरी राय।
रोंक जुलूस दओ आगे से सुपरुडण्ट लहाउर क्यार ॥
चलिगै लाठी वहां भीड़ में डंडा चलन लगो तत्काल।
लाठी लागी लाला जी के मारे गये लाजपति राय ॥
सुनत खबरिया परलै हुइगै सबरो देश उठो सन्नाय।

सन्नाटा छावो भारत में भारतवासी उठे रिसाय ॥
खून को बदला खून से हुइहै यहु ऐलान दओ करवाय ।
सेनापति ने हुकुम सुनाओ बदला लओ जाय तत्काल ॥
हिन्दुस्तानी बदला लीहैं अब ना सहैं ज़रा अपमान ।
देखि हकीकत यहि मौका की बृटिश हुकूमत भई तयार ॥
दोऊ ओर से भई तयारी ज्वानौ सुनि लेव कान लगाय ।
हिन्दुस्तानी क्रान्ति कमेटी जो है संघ भारतिन क्यार ॥
साम्यवादी प्रजातन्त्र था जाको पूर्ण नाम वहि काल ।
हुकुम फेर दओ मुलुक भरे माँ ज्वानौ सुनि लेव कान लगाय ॥
बिना मरे बेऊ ना बचिहैं जिनने मारे लाजपति राय ।
जो हत्यारो लाला जी को वहु हत्यारो भारतिन क्यार ॥
नेता जिनके मारे जावें उनके जीबे को धिक्कार ।
सुनि ऐलान क्रान्तिकारिन की बृटिश हुकूमत गई घबड़ाय ॥
तुरत बुलावो है सौंडर को साहब जौन लहाउर क्यार ।
सुपरिंटेण्ट हतो लाहुर को औ हत्यारो लाजपति क्यार ॥
हमला होइहै तुमरे ऊपर सो बचिबे को करौ उपाय ।
जितने सिपाही तुमका चहिये सो लै लेउ यहां से भाय ॥
सुनिके बातैं यह सरकारी साहब गये सनाका खाय ।
समझ में उनकी कछु आवे ना जैसे अक्किल गई हेराय ॥
पुलिस बुलाई गारद वाली पहरा बंदी दई कराय ।
चारों तरफ खड़ी कोठी के बांधे पांच २ हथियार ॥
बिना हुकुम के ना कोइ आवे ऐसा हुकुम दओ करवाय ।
चारों ओर से फौजें ठाढ़ीं बहिरो आवै न भितरी जाय ॥
ऐसो हाल देखि साहब का सेनापति ने करो बिचार ।

भगतसिंह औ राजगुरू को चन्द्रशेषर ने लओ बुलाय ।।
तुमरो भरोसो हम राखत हैं भैया सुनि लेव कान लगाय ।
होत हंसौवा दुनियां भर में मारे गये लाजपतिराय ।।
ना कोई अमर भओ दुनिया में इक दिन मरै सबै संसार ।
जिन्दा नहीं भगतसिंह रहि हैं नाहीं अमर होयं आज़ाद ।।
तासों नाम करो दुनियां में शाका चलो अगारी जाय ।
सुनिकै बातें सेनापति की दोऊ बीर भये तैय्यार ।।
भगतसिंह औ राजगुरू ने अपने बाँधि लये हथियार ।
कसम उठाई गंगा जी की बदलो लेंय लाजपति क्यार ।।
जिम्मेदारी भगतसिंह की देखतै गोली दिहैं चलाय ।
जो कोइ धावै इनके ऊपर तेहि सेनापति देंय उड़ाय ।।
समै समैया के औसर मां संध्या काल रहो नियराय ।
हवा खान को साहब निकले मोटर साइकिल संघ लिवाय ।।
हवलदार उनके संग में था जो मोटर को रहो चलाय ।
खड़े बहादुर सड़क के ऊपर वहां से मोटर निकली जाय ।।
जैसे समुहें मोटर आई भगत ने गोली दई चलाय ।
गोली लागी जब पहिया में मोटर तुरत खड़ी होय जाय ।।
देख के सूरत इन बीरन की साहब मन माँ गये घबड़ाय ।
अब ना बचिहैं प्राण हमारे औ ना कोई चलै उपाय ।।
डटि के हिकरा राजगुरू ने तुरतै गोली दई चलाय ।
चूकि निशाना गयो क्षत्री को गोली लगी पैर में जाय ।।
यह गति देखी हवलदार ने तुरतै लओ तमंचा हाथ ।
छोड़ी गोली हवलदार ने भगत सिंह की सूध लगाय ।।
बचि गये बेटा भारत मां के उनको राखि लयो भगवान ।

जह गति देखी सेनापति ने हवलदार से कही सुनाय।
चोट आपनी तुमने कर लई अपने काढ़ि लये अरमान॥
हमरी चोटन से बचि जैहो घर में छटी भरैयो जाय।
इतनी कहि के गोली छांड़ी हवलदार को दयो गिराय।
गिरत सिपाही परलै हुइगै साहब होश गुम्म हुइ जाय॥
समझ में उनकी कछु आवै ना अब धौं कहा करै करतार।
छोंड़ि कै मोटर भागन लागे सेनापति ने दइ ललकार॥
यही बहादुरी तुम राखत थे या पै मारे लाजपति राय।
नेक शरम तुमको नहिं आवे काहे भागो प्राण बचाय॥
छाओ क्रोध चन्द्रशेखर को भगतसिंह से कही सुनाय।
बचि कै वैरी भगि जो जैहै तौ का खाक बटोरिहौ जाय॥
ऐसो समय फेरि ना मिलिहै अब कस राखी देर लगाय।
तासों मारि देव साहब को इतनी मानौ कही हमार॥
इतनी सुनिकै भगतसिंह ने मन अपने यां कियो विचार।
भगे सिपाही का जो मारैं तौ क्षत्रीपन जाय नशाय॥
हुकुम कठिन है सेनापति का जाको हम ना सकैं मिटाय।
सांप छछूंदरि की गति हुइ गइ उगलत बनै न लीलो जाय॥
जो ना मरिहैं हम साहब का तौ जग होइहै हँसी हमार।
जो प्रण कठिन चन्द्रशेखर को जाको हम ना सकैं मिटाय॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्र को तुरत लओ तमंचा हाथ।
बारह फैरी लिये तमंचा गोली लगे काल हुइ जाय॥
डाँटि निशाना भगतसिंह ने औ साहब पर दओ चलाय।
दस गज साहब भगन न पाये गोली लगी शीस पर जाय॥

छांड़ी गोली राजगुरू ने साहब गिरे धरनि भहराय ।
छूटैं तमंचा दोउ बीरन के जैसे मघा बूंद झरि लाग ॥
गोली लागीं जब साहब के सो नस २ में गईं समाय ।
यह गति देखी सेनापति ने मन में बहुत खुशी हुइ जाय ॥
शाबस शाबस तुमको भय्या तुमने राखी लाज हमार ।
शहर भर में खबर फैलि गई बदलो लियो लाजपत क्यार ॥
खुशी फैल गइ सब भारत में मिटि गई झेंप भारतिन क्यार ।
बृटिश हुकूमत मन घबड़ानी मन में बहुत रही खिसिआय ॥
सोचै समझै मनै बिचारै मनमें एक आवे एक जाय ।
सेनापति आजाद राजगुरु तिसरे भगतसिंह सरदार ॥
फैली कीरति है दुनियां में बृटिश हुकूमत गइ थर्राय ।
खोजैं होन लगीं चारों लंग चहुँ दिश होन तलाशी लाग ॥
मूड़ पटकि के मरी हुकूमत जौं भर पता सकी ना पाय ।
लाख रुपैया उसको मिलिहैं जो कोई पकड़ावे आजाद ॥
गवर्नमेण्ट ने चाल चली एक औ क़ानून बनावान लागि ।
जाको चाहें ताको पकड़ैं जेल में देंय बंद करवाय ॥
नहीं मुक़दमा चलै तासु पर नाहीं सजा केर दरकार ।
तौ लौं बंद रहैं जेलन में जौं लौं मन चाहे सरकार ॥
सेफ्टी बिल था नाम तासु को वह कानून बड़ा बिकराल ।
औ कानून कर दओ जारी ना कोइ कर पावे हड़ताल ॥
करै सङ्गठन जो भारत में ताको जेल देव पठवाय ।
रूप देखि कै इन हुकुमन को दुनियां गई सनाका खाय ॥
भये विरोधी भारतवापी हाहाकारी पड़े सुनाय ।

ध्यान दओ ना अंगरेजन ने मन में बात लई ठहराय ॥
यह कानून पास करि लेवे चाहे कोटिन करो उपाय।
निश्चय कीन्हों सेनापति ते बहिरे कान देंय खुलवाय ॥
मीटिंग होवे असेम्बली में बैठे बड़े बड़े सरदार।
भारत मां के हते लाड़ले औ हैं प्राण जवानन क्यार ॥
बाड़ि बाड़ि उम्मीदें उनसे थीं मां के दोउ दुलारे लाल।
कानपुर के बटुकेश्वर जी नाहर भगतसिंह सरदार ॥
करी तयारी उन चलबे की सजि के तुरत भये तैयार।
चले बहादुर असेम्बली को अपने बांधि बांधि हथियार ॥
लै पिस्तौलें जर्मन वाली खाली चोट एक ना जाय।
बारह फैर को लयो तमंचा गोली लगत काल होय जाय ॥
भगतसिंह औ बटुक बहादुर बम्ब को गोला लओ उठाय।
रूप देखि के इन बीरन को बड़े बड़े शूर जायं घबड़ाय ॥
जाय के पहुँचे हैं फाटक पर जैसे सिंह वनी को जाय।
देखि के सूरत भगतसिंह की दरबानी मन गये घबड़ाय ॥
फाटक खोलि दयो द्वारे को मुह से कछू न आई बात।
जेसे गाय सिंह को कांपै देखत प्राण जांय घबड़ाय ॥
खौफ खाय गये तहं दरमानी तुरतै रस्ता गये बराय।
बिना पास के भीतर पहुँचे बैठे जहां शूर सरदार ॥
सत्यमूर्ति, सी० आर० दास जहं बैठे चिंतामणि सरदार।
गोविन्द बल्लभ पन्त जहां पर बैठे मोतीलाल महराज ॥
हंसि हंसि बातें करैं मालवी कछु तारीफ करी ना जाय।
सभापती बिट्ठल भाई थे जिनको जानै सकल जहान ॥

तेजवन्त, बलवान, बहादुर जिनसे गौरमेंट थर्राय।
छोटे छोटेन की गिनती क्या बड़े बड़े शीस झुकावैं आय॥
बुद्धि को लोहा जग ने मानों लाट से माफी लई मंगाय।
जहं अंग्रेज बहुत बैठे थे बैठे बड़े बड़े महराज॥
और बयरिया डोलत लागी औरै होन लगे व्यबहार।
होन बहस फिर बिल पर लागी अब आगे के सुतो हवाल॥
जैसे जेमस बोलन लागे अगुआकार हुकूमत क्यार।
बात बुरी भारत बासिन को जब जेमस ने कही सुनाय॥
ज्वाब दओ ना तब काहू ने भगतसिंह फिर उठे रिसाय।
काली पुतरिया ने रंग बदलो नैनन रही लालरी छाय॥
क्रोध की आगी दहकन लागी भागी शान्ति गई रिस आय।
बटुकेश्वर को तब ललकारो अब क्यों राखी देर लगाय॥
करै बुराई मेरे देश की याको देव जान से मारि॥
गुस्सा आई बटुकेश्वर को बम्ब को गोला दओ चलाय।
गोला फूटत परलै होयगै धुंअना रहो वहां पर छाय॥
भगदड़ पड़गई तब बैठक में भागे अपने प्राण बचाय।
खैंचि तमंचा लियो हाथन में मारा मारी दई मचाय॥
घोड़ा दबतै परलै हुइ गई हाहाकारी शब्द सुनाय।
कोऊ भागे हैं बाहर को कोऊ छिपे कुर्सियन बीच॥
कोऊ भागे ऐसी वैसी कोऊ छिपे मेज तर जाय।
कोऊ छिपिगे टट्टी घर में कोऊ छिपे गुशल में आय॥
का गति बरणौं वहि समया की मारा मारी परै सुनाय।
जेमस साहब वहं ते भागे मंत्री जौन हकूमत क्यार॥

बड़े २ अंग्रेज वहां से अपने लै २ भगे परान।
कोई गोरा रहो वहां ना रहिगे भारत के सरदार॥
फेंक तमंचा दओ बीरन ने औ यह कही सुनाय २।
किसको मारें अपने कर से तुम सब भाई लगो हमार॥
कोइ अंगरेज यहां पर होतो हम जमपुरी देत पहुंचाय।
सभापती ने पीठी ठोंकी तुम भारत की राखी लाज॥
खाली हाथ खड़े थे नाहर कोऊ निकट न उनके जाय।
थर थर कांपैं जेमस साहब औ सब गोरा गये घबड़ाय॥
भागि न जाते जो मोहरा से तौ बिन मरे एक ना जात।
भगतसिंह तब बोलन लागे गरुई हांक दई ललकार॥
बैठे मौज करौ कुर्सिन पर बाहर भूखन मरैं किसान।
होत लेकचर भगतसिंह को सब से कहैं सुनाय सुनाय॥
हालत बहुत बुरी भारत की तुमको नहीं ज़रा परवाह।
रात दिना मेहनत जो करते रोटी मिलै पेट भर नाहिं॥
ज़ुलुम बहुत हैं अंग्रेजन के घर घर लूटि रहे करवाय।
पटवारी मांगें फसलाना उल्टी सीधी कलम चलाय॥
पुलिस तंग नित उठि करती है झूठे सांचे जाल बनाय।
अमला सरकारी सब लूटैं चूसैं खून किसानन क्यार॥
जमींदार की कौन चलावे उनको हाल कहो ना जाय।
नजराना, फसलाना लेवें लेवें हरी और बेगार॥
बिदा रसीदी रुपया लेवैं ऊपर धौंस दिखावैं आय।
जरा बुराई उनसे होवे झूठी नालिश देत कराय॥
नालिश करिके दफ़ा लगावैं जबरन खेती लेंय छुड़वाय।

माल कुड़क घर को कर लावें सो दुख हमसों कहो न जाय ॥
हाल जमींदारन को छोड़ो किस्सा सुनो महाजन क्यार।
झूठो रुक्का वह करवावें दस के बीस लेत लिखवाय ॥
सूत अधन्नी और इकन्नी रुपया पर वे रहे लगाय।
एक २ के दस २ लेवें तबहूं वे न करैं उद्धार।
झूठी सांची नालिश करिके कुर्की जब्ती रहे कराय ॥
गर्जो बहादुर असेम्बली में जो है भगतसिंह सरदार।
मोतीलाल औ गोबिन्द बल्लभ मुंह तन चितै २ रहि जायं ॥
कोई ज्वाब देत ना उनको भगतसिंह फिर कही सुनाय।
नौकरशाही जौं लौं रहिहै तौ लौं सुख ना परै दिखाय ॥
मेख उखरि जाय अंग्रेजन की तबहीं सुखी होय संसार।
अंग्रेजन के मददगार हैं बड़े २ जमीदार दल्लाल ॥
राजा और महाजन यहं के कायम किये बृटिश सरकार।
प्रथा जमीदारी मिटि जावे तौ अंग्रेज तुरत भगि जायं ॥
तासों तुमका समुझावत हौं इतनी मानौं कही हमार।
करौ संगठन सब भारत में भारतबासी बात उनाव ॥
बनो सिपाही सब कांग्रेस के बृटिश हुकूमत देव मिटाय।
कांगरेस के बनो मेम्बर जासों काम सिद्ध होय जाय ॥
एक साल में एक चवन्नी कांगरेस को देव गहाय।
नाम लिखाओ तुम दफ्तर में मेम्बर बनो कांग्रेस क्यार ॥
गांव २ में बनैं कमेटी एका होय किसानन क्यार।
जमींदार मनमें घबड़ावें साहूकार सकल मिटि जांय ॥
लूट बंद सब इनकी हुइ जाय होवे राज्य किसानन क्यार।

चलै हथौड़ा मजदूरन को हसिया चलै किसानन क्यार ॥
बृटिश हुकूमत मिटै यहां से होवे राज्य गरीबन क्यार।
कड़ियां कटि जांय भारत मां की हिन्दोस्तां होवे आजाद ॥
बैठक खतम यहां की कर दई भगतसिंह ने कही सुनाय।
भारत माता की जै बोलो इन्कलाब औ जिन्दाबाद ॥
खतम लड़ाई यहं पर होय गई किस्सा यहीं खतम होइ जाय।
भाग दूसरे माँ समझैबे पूरो हाल कांग्रेस क्यार ॥
कैसे पकड़े गये भगतसिंह कैसे चलो लहाउर कांड।
कैसे केस चलो मेरठ को कैसे मारे गये आजाद ॥
सत्याग्रह की लिखैं लड़ाई भारत बीर भये तैय्यार।
हाल सुनैहैं असेम्बली को पाई विजय जवाहरलाल ॥
लिखिहैं हाल जमींदारन को औ कानून किसानन क्यार।
जो कुछ भूल होय लिखिबे माँ सज्जन लीजो सबै सम्हारि ॥
बुरा न कोऊ इसको मानें यह है युद्ध अज़ादी क्यार।
धन्यबाद पहिले दै दीजै कीजै पीछे ख़तम किताब ॥
दई सलाहें हैं मित्रन ने जिनके नाम देंय गिनवाय।
देवीदयाल अन्तापुर बासी भोलानाथ निटर्रा क्यार ॥
लच्मीनरायन दनियापुर के सेवा करैं किसानन क्यार।
छोड़ि मास्टरी दई सोमेश्वर झंडा लओ तिरंगा हाथ ॥
भगवादीन कोरौंव्वा वाले जो मरिबे को नाहिं डेरायं।
रामनरायन खालेगांव के जिनको जानें सकल जहान ॥
दुइ २ साल जेल में काटी जिनको नहीं जरा परवाह।
पांड़े मंगली सेमरामउ के जो हैं सच्चे मित्र हमार ॥

औरो बहुत हमारे साथी जिनके नाम न सकें गिनाय।
नित उठि सेवा करैं देश की अपनो सर्बस दओ गवांय॥
जो कुछ भूल परी लिखिबे में सब मित्रन ने दई बताय।
यहां से आल्हा बन्द होत है सज्जन सुनि लेव कान लगाय॥
देव चौअन्नी कांगरेस का मेम्बर बनो जाय तत्काल।
करो एकता सब आपस में बृटिश हकूमत देव भगाय॥
जीत के नारे फेरि लगावो इन्कलाब औ जिन्दाबाद।
राज तुम्हारो यहं पर होवे स्वतंत्र भारत जिन्दाबाद॥

❀ महात्मा गांधी की जै ❀

प्रिंटर प० राधामोहन बाजपेई द्वारा ब्राह्मण-प्रेस कानपुर में मुद्रित।

किसान पुस्तकमाला

की

आदर्श पुस्तकें।

१—आबपाशी का सवाल—लेखक—श्री रामनारायण त्रिपाठी
मंत्री जिला किसान संघ, कानपुर।

मूल्य ≡)

२—राष्ट्रीय आल्हा यानी भगतसिंह की लड़ाई (दूसरा भाग)—
लेखक—कामरेड सूर्यप्रसाद मिश्र

मूल्य ≡)

३—फेडरेशन क्यों नामंजूर किया जाय—
लेखक—कामरेड सूर्यप्रसाद मिश्र

मूल्य ≡)

पुस्तकों के मिलने का पता :—

रामनारायण त्रिपाठी,
खालागांव, पोस्ट देरापुर, जिला कानपुर।